मेरा पन्ना

एक राक्षस था और एक घोड़ा था। राक्षस ने घोड़े को रोक लिया। फिर वो हंटर से घोड़े को मारने लगा। घोड़ा बोला मुझे क्यों मार रहे हो? मैंने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है? मुझे मेरे मालिक के पास जाने दो। मेरा रास्ता क्यों रोक रहे हो? इतने में सूरज निकल आया। वह राक्षस से बोला, इसे क्यों मार रहे हो?

बबलेश, होशंगाबाद, म.प्र.

करण कारकले, छठवीं

मौसम

पल-पल में बदलते मौसम
कभी छाँव में कभी धूप में ढलते मौसम
कभी बूंदों को संग लेकर, तो
कभी बसंत को लाते मौसम
कभी ओस की बूंदें लेकर, तो
कभी ओले बरसाते मौसम
कभी ठंडी-ठंडी हवाओं के साथ
कभी सरसराते पत्तों में
कभी खुशबूओं के संग
झूम-झूम कर गाते मौसम
एक पल में अंधेरा एक पल में उजाला
अजीब-सा है मौसम का ये रूप निराला

रीता सिंह, देवास, म.प्र.

तोता और पेड़

यह पुरानी कविता है:

मिट्ठू-मिट्ठू तोता
डाली ऊपर सोता

पर अब लिखा जा सकता है:

मिट्ठू-मिट्ठू तोता,
पेड़ कटते देख रोता।
डाली-डाली, ढूंढता रहता,
कहाँ अब वो सोता?

यह सही है कि पेड़ अब धड़ाधड़ कटने लगे हैं। पशु-पक्षियों को रहने के लिए जगह नहीं मिल पाती है। सूखे पेड़ों को छोड़कर लोग हरे-भरे पेड़ों को काटकर कई परिवारों को बेघर कर रहे हैं। लोगों को यह नहीं भूलना चाहिए कि हरे-भरे पेड़ जीवित हैं और कईयों को जीवन देते हैं। जबकि मनुष्य इसके विपरीत कर रहा है। उसे शायद यह नहीं पता कि वह पेड़ों को मारकर अपने आप को मार रहा है। जितने पेड़ कटेंगे उतनी ही ऑक्सीजन कम होगी और इससे हमारा अस्तित्व खतरे में पड़ जाएगा। हमें पेड़ों को काटने की बजाय अधिकाधिक पेड़ लगाने चाहिए ताकि ये डरे-सहमे तोते स्वतंत्रता से जीवन बिताएँ। जैसा कि कहा गया है: "जियो और जीने दो।"

अशिता सक्सेना, सातवीं, गुना (म.प्र.)

जसलीन कौर, पाँचवीं, दुर्ग (म.प्र.)

रितिका गौर, पाँच वर्ष, भोपाल (म.प्र.)

आयुष शर्मा, पाँचवीं, उज्जैन (म.प्र.)

रिशी देसाई, पहली, उज्जैन (म.प्र.)

संदीप कुमार पटेल, छठवीं, भोपाल (म.प्र.)